इस धरा का इस धरा पे सब धरा रह जायेगा

इस धरा का इस धरा पे,
सब धरा रह जायेगा,
भज गोविन्दम् मूढ़मते,
हरि सुमिरन काम ही आयेगा,
इस धरा का ----------

झूठे बंधन झूठे रिश्ते,
झूठी माया नगरी में,
साँस टूटी सब रिश्ता टूटा,
कोई काम न आयेगा,
इस धरा का---- ---------

पंचतत्व की कंचन काया,
मिट्टी होनी है इकदिन,
मुट्ठी बांधे आया जग में,
तू हाँथ पसारे जायेगा,
इस धरा का----------

हरि नाम कलिकाल कल्पतरु,
भर ले झोली सुमिरन से,
चार लाखि चौरासी भव से,

बस सुमिरन पार लगायेगा,
इस धरा का----------

रचना आभार : ज्योति नारायण पाठक
वाराणसी

Source:
https://www.bharattemples.com/is-dhra-ka-is-dhara-pe-sab-dhra-reh-jayega/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw